वर्ष : 10 अंक : 2 अप्रैल–जून 2015

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. मंगला राय, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण)

कुलपति संदेश

उत्तराखण्ड में उद्यमिता विकास की अपार सम्भावनाएं हैं। हमारी उर्वरा मिट्टी में अद्भुत उत्पादन शक्ति है और कृषि, उद्यान, वानिकी, मत्स्य एवं पशुपालन के विभिन्न क्षेत्रों में उद्यमिता विकास से इस प्रदेश का चौमुखी विकास सम्भव है। प्रदेश में उत्पादित फसलों, फल–फूल, मत्स्य एवं दुग्ध उत्पादन में वृद्धि कर एवं स्थानीय स्तर पर मूल्य संवर्धन कर प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद तैयार किया जाये तो प्रदेश की अर्थव्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकेगा।

उद्यमिता विकास से रोजगार सृजन होगा एवं प्रदेश से युवाओं का पलायन भी रूकेगा। उत्तराखण्ड में फल–फूल उत्पादन, औषधीय एवं सगन्ध पौध उत्पादन, मत्स्य पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन के साथ ही पशुपालन की बेहतर सम्भावनाएं है। पौध एवं पशु प्रजनन के नये आयामों के साथ ही जैव प्रौद्योगिकी के अधिकाधिक प्रयोग से फसल तथा पशुओं की उत्पादकता और गुणवत्ता को बढ़ाकर पन्तनगर विश्वविद्यालय आने वाले समय में देश के कृषि विकास को एक नया आयाम प्रदान करेगा। हमारे विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक जैव प्रौद्योगिकी के उन क्षेत्रों का चयन कर रहे हैं, जिन पर सक्रिय रूप से शोध कर कृषि क्षेत्र में नई सफलता के प्रतिमान खड़े किये जा सकेंगे।

अभी हाल ही में ब्रिक्स समूह (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) के विश्वविद्यालयों की वर्ष 2015 की रेटिंग में पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय शीर्षस्थ 200 विश्वविद्यालयों में समाहित है, जिसमें भारत से कुल 31 विश्वविद्यालय हैं और उनमें मात्र एक कृषि विश्वविद्यालय पन्तनगर है। यह तो एक शुरूआत है। हम प्रतीक्षारत उस दिन के लिए है जिस दिन पन्तनगर विश्वविद्यालय का एक भी सानी नहीं होगा। साधन महत्वपूर्ण हैं। पर जब भाव होंगे तो अभाव हो ही नहीं सकता। मैं मानता हूँ कि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। अतएव, आइये एक दूसरे का मनोबल बढ़ाते हुए प्रबल प्रयास करते हैं जिससे इस विश्वविद्यालय, प्रदेश और देश का मान एवं सम्मान बढ़ सके और हम सब पन्तनगर के शिक्षक, वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र होने का गौरव महसूस कर सकें।

शुभकामनाएँ।

(मंगला राय)
कुलपति

कृषि विज्ञान केन्द्रों के समीक्षा बैठक का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्रों की समीक्षा बैठक का आयोजन कुलपति, डा. मंगला राय की अध्यक्षता में कुलपति सभागार में मई 16, 2015 को किया गया। बैठक के प्रारम्भ में कुलपति जी ने निर्देशित किया कि सभी कृषि विज्ञान केन्द्र अपने–अपने जनपदों में पांच–पांच गांवों को अंगीकृत करें तथा निर्धारित प्रोफार्मा के अनुसार चयनित गांवों का बेंचमार्क आंकड़ा इकट्ठा करेंगे ताकि वहां पर कार्य करने से पहले की स्थिति का पूरा ज्ञान हो सके तथा आगे उनमें किए जाने वाले कार्यों के बाद उनकी तुलना हो सके। इसी के आधार पर ही कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किये जाने वाले कार्यों का असर आगे देखा जा सकेगा। कुलपति जी ने कहा कि भारत जैसे देश में, जहां की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है, वहां कृषि की समस्याओं को सुलझाकर उसे धनोपार्जन का जरिया बनाये बिना ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार उत्पन्न नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र बदलाव के साधन हैं और विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केन्द्र एक वर्ष के अन्दर आदर्श कृषि विज्ञान केन्द्र के रूप में उभरेंगे, जिनका दूसरे लोग अनुसरण करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। डा. राय ने कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यों की समीक्षा के दौरान उन्हें उद्योगों से जुड़ने का सुझाव दिया, ताकि किसानों को इसका फायदा दिया जा सके। इस अवसर पर कुलपति ने सर्वसम्मति से महत्वपूर्ण निर्णय लिए जिनमें कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी को सभी वित्तीय अधिकार देना, वाहय संस्थानों में प्रतिनियुक्ति पर गए तकनीकी व अन्य कर्मियों को वापस बुलाना, सभी कृषि विज्ञान केन्द्र को अपने–अपने क्षेत्रों की खाद्यान्न, दलहनी, तिलहनी फसलों की विभिन्न स्थानीय प्रजातियों को इक्ट्ठा करना व इस कार्य के लिए विश्वविद्यालय द्वारा अलग से धन उपलब्ध कराना, इत्यादि सम्मिलित हैं। उन्होंने विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किए जा रहे कुछ महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की तथा सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों में कुछ नवोन्मेषी कार्यक्रम चलाए जाने का सुझाव दिया।

बैठक में क्षेत्रीय मुख्य महाप्रबन्धक, नाबार्ड, श्री सी.पी. मोहन ने बताया कि नाबार्ड ग्रामीण विकास एवं कृषि विकास हेतु वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराती है तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के गांव अंगीकृत लेने वाली योजना में वे नाबार्ड की ओर से धन उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने उत्तराखण्ड के किसानों की छोटी एवं बिखरी जोत, तकनीकों की कमी इत्यादि के परिप्रेक्ष्य में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा गांवों के समग्र विकास के उद्देश्य से कार्य करने की आवश्यकता बताई ताकि कार्यक्रम की समाप्ति पर उसका प्रभाव दिखाई पड़े। बैठक में विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, निदेशक प्रसार शिक्षा, निदेशक अनुसंधान केन्द्र, विश्वविद्यालय के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी एवं वैज्ञानिक भी उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय के प्रसार सलाहकार समिति की नवीं बैठक का आयोजन

पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार सलाहकार समिति की नवीं बैठक का आयोजन मा. कुलपति, डा. मंगला राय की अध्यक्षता में मई 18, 2015 को कुलपति सभागार में सम्पन्न हुआ, जिसमें राज्य में कृषित फसलों की प्राथमिकता के आधार पर कृषकों/प्रसार कर्मियों के ज्ञानवर्धन हेतु छः माह में नॉलेज कैप्सूल का पोर्टल तैयार करने का निर्णय लिया गया। प्रसार गतिविधियों एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभावी अनुश्रवण एवं मूल्यांकन के सम्बन्ध में अधिष्ठातागण एवं आवश्यकतानुसार विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्रों पर भ्रमण कर उचित मार्गदर्शन देने, कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय द्वारा एक निर्देशिका

का प्रारूप तैयार करने जिसमें उत्तराखण्ड की आवश्यकताओं के अनुरूप खाद्य सुरक्षा, रोजगार के अवसर, सामाजिक उत्थान, शिक्षा के उन्नयन आदि को सम्मिलित कर प्रारूप तैयार करने का निर्णय लिया गया। कुलपति जी द्वारा एटिक को और अधिक क्रियाशील बनाने हेतु निर्देश दिये गये कि एटिक पर विश्वविद्यालय द्वारा उत्पादित बीज, फल व सब्जी पौध एवं अन्य निवेश तथा जल्दी खराब न होने वाले अन्य उत्पादों की बिक्री सुनिश्चित की जाय। एटिक पर विचार–विमर्श के दौरान अपेक्षा की गयी कि विश्वविद्यालय में एक ऐसा स्थान विकसित किया जाय जहां पर विश्वविद्यालय के सभी उत्पाद उपलब्ध हों। यह भी निर्णय लिया गया कि आगामी बैठक अक्टूबर 16, 2015 को होगी तथा प्रतिवर्ष यह बैठक वर्ष में दो बार खरीफ एवं रबी की फसल की बुवाई से पूर्व आयोजित की जायेगी। इस बैठक में विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, निदेशक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयक के साथ ही वाह्य संस्थानों के प्रभारी/वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया।

'उत्पादक संगठनों का गठन एवं अन्य नाबार्ड योजनाएं' विषयक कार्यशाला का आयोजन

पन्तनगर विश्वविद्यालय के कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय में 'उत्पादक संगठनों का गठन एवं अन्य नाबार्ड योजनाएं' विषयक कार्यशाला का आयोजन जून 30, 2015 को निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास की अध्यक्षता में किया गया। कार्यशाला में नाबार्ड के अधिकारियों द्वारा बताया गया कि वर्ष 2014–15 के केन्द्रीय बजट में की गई घोषणा के क्रम में नाबार्ड में रू. 200 करोड़ के प्रोड्यूसर आॅर्गेनाइजेशन डेवलपमेंट एण्ड अपलिफ्टमेंट कॉर्पस की स्थापना की गयी है, जिसके तहत अगले 2 वर्ष के अन्तराल में देश भर में 2000 उत्पादक संगठनों का गठन एवं विकास किया जाना प्रस्तावित है। इस हेतु नाबार्ड द्वारा कृषक उत्पादक संगठनों के गठन एवं विकास हेतु एक योजना बनाई गई है।

कार्यशाला में उपस्थित नाबार्ड प्रतिनिधि एवं निदेशक प्रसार

इसी परिप्रेक्ष्य में नाबार्ड द्वारा उत्तराखण्ड राज्य में 40 उत्पादक संगठनों का गठन प्रस्तावित है। इस योजना के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं नाबार्ड के मध्य समन्वयन की सम्भावनाओं पर चर्चा एवं कार्ययोजना बनाने के उद्देश्य से उक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों ने भाग लिया, जिसमें नाबार्ड के उप–प्रबन्धक, श्री आशीष कुमार पाढी; डी.डी.ए., श्री अशोक चौहान एवं श्री विशाल शर्मा तथा निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास; अधिष्ठाता, कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय, डा. देवेन्द्र कुमार; कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय के संकाय डा. आशुतोष सिंह, डा. मुकेश पाण्डे, डा. सौरभ सिंह एवं श्री निर्देश कुमार सिंह ने भी प्रतिभाग किया।

कुलपति डा. मंगला राय द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों पर भ्रमण

मई 08, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल) का भ्रमण किया गया तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों को पर्वतीय क्षेत्र हेतु आदर्श फार्म योजना पर माड्यूल तैयार करने का निर्देश दिया गया।

जून 06, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा) का भ्रमण किया गया। भ्रमण उपरान्त कुलपति महोदय द्वारा केन्द्र को और अच्छा कार्य करने तथा केन्द्र के प्रक्षेत्र पर उन्नत प्रजातियों के फल वृक्षों के पौध रोपित करने के लिए आवश्यक सुझाव दिये गये।

केन्द्र का अवलोकन करते हुए मा. कुलपति डा. मंगला राय

जून 07, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़) का भ्रमण किया गया। कुलपति जी द्वारा केन्द्र, पर स्थापित मशरूम इकाई, कुक्कुट पालन इकाई, मछली एवं सिचाई टैंक, पॉलीहाउस आदि का निरीक्षण किया गया। कुलपति द्वारा गैना एवं ऐंचोली प्रक्षेत्र में बादाम, अखरोट, आड़ू इत्यादि के पुराने हो चुके वृक्षों के स्थान पर उन्नतशील प्रजातियों के वृक्ष रोपित करने का निर्देश दिया गया। साथ ही खरीफ मौसम में नींबू वर्गीय एवं अनार के उन्नतशील प्रजातियों के पौधों को लगाने के निर्देश दिये ताकि क्षेत्र के कृषकों हेतु यह प्रक्षेत्र एक मॉडल के रूप में विकसित किया जा सके। केन्द्र पर कृषकों के प्रदर्शनार्थ जल संरक्षण हेतु अनेक मॉडल विकसित करने का सुझाव दिया। जिले की उपजाऊ भूमि के लगातार हो रहे कटान पर उन्होंने चिन्ता व्यक्त की। भूमि कटाव को रोकने हेतु विभिन्न समन्वित प्रक्रिया अपनाये जाने पर जोर दिया। कुलपति ने केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा जनपद पिथौरागढ़ में कृषि के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा कुलपति जी द्वारा केन्द्र पर मार्च 2016 तक 8–10 है. क्षेत्र में फलदार वृक्षों के रोपण का निर्देश दिया गया।

जून 08, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत) का भ्रमण कर केन्द्र पर किये जा रहे कार्यों का अवलोकन किया गया एवं केन्द्र के प्रक्षेत्र को विकसित एवं सुदृढ़ करने का निर्देश दिया गया।

जून 16, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार) का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने केन्द्र के प्रक्षेत्र व प्रदर्शन इकाईयों का अवलोकन किया। साथ ही केन्द्र के समस्त स्टाफ के साथ बैठक कर केन्द्र के कार्यों की समीक्षा की।

जून 19, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून) की गतिविधियों को अनुश्रवण किया गया, जिसमें केन्द्र के आम उद्यान, लीची उद्यान, अनार उद्यान एवं केन्द्र की गतिविधियों को मा. कुलपति जी द्वारा अवलोकित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन मई 26–28, 2015 को क्षेत्रीय परियोजना निदेशालय, जोन–4 (भा.कृ.अ.प.), कानपुर में क्षेत्रीय परियोजना निदेशक, डा. यू.एस. गौतम की अध्यक्षता में किया गया। उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों हेतु आहूत कार्यशाला में विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्यरत समस्त 09 कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयको सहित संयुक्त निदेशक प्रसार (कृषि अभि.), डा. टी.पी. सिंह तथा सह निदेशक (सस्य), डा. बी.एस. कार्की द्वारा प्रतिभाग किया गया। समीक्षा बैठक में कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा वर्ष 2014–15 में किये गये प्रसार कार्यों की समीक्षा की गयी तथा वर्ष 2015–16 की कार्य योजना पर व्यापक विचार–विमर्श कर अंतिम रूप दिया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

जनपद देहरादून के विकास खण्ड विकासनगर, सहसपुर, रायपुर, डोईवाला, कालसी एवं चकराता के अन्तर्गत 6.90 है. क्षेत्रफल में गेहूँ, दलहनी, चारा घास (बरसीम), बैंगन, मिर्च, टमाटर एवं लहसुन की विभिन्न प्रजातियों का अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र प्रदर्शन के माध्यम से 94 कृषक प्रक्षेत्रों पर प्रदर्शन आयोजित किया गया। उक्त प्रदर्शनों में समेकित नाशीजीव प्रबन्धन एवं समेकित पोषक तत्वों के प्रबन्धन के द्वारा फसलों की उत्पादन क्षमता की वृद्धि हेतु समुचित तकनीकी विधियों को अपनाकर उत्पादकता में वृद्धि हेतु तकनीकी जानकारी दी गयी। केन्द्र पर गेहूँ की 10 प्रजातियों का परीक्षण किया गया। परीक्षण में प्रजातियों की बढ़वार, बालियों की लम्बाई तथा उत्पादन क्षमता का अध्ययन सम्मिलित है। केन्द्र पर ही गेहूँ बीजोत्पादन के अन्तर्गत वी.एल.–907 का 3 है. क्षेत्रफल में बीजोत्पादन किया गया। विकास खण्ड विकासनगर के ग्राम प्रतीतपुर में दलहनी चारा उत्पादन तकनीक को बढ़ावा देने हेतु बरसीम की मस्कावी

प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

प्रजाति के उत्पादन हेतु अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से अप्रैल 04, 2015 को प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 21 कृषकों ने प्रतिभाग किया।

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में फसलोत्पादन, सब्जी उत्पादन, समेकित नाशीजीव प्रबन्धन, मृदा विज्ञान, पशुपालन, कुक्कुट पालन, बकरी पालन एवं गृह विज्ञान विषयों के अन्तर्गत 18 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 571 प्रशिक्षाणार्थियों को तकनीकी जानकारी देकर लाभान्वित किया गया।

जनजातीय विकास परियोजना (टी.एस.पी.) के अन्तर्गत विकास खण्ड चकराता के अटाल गांव तथा विकास खण्ड कालसी के उत्पाल्टा गांव में प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें 82 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

केन्द्र द्वारा अप्रैल 25–27, 2015 को कृषि उत्पादन मण्डी समिति देहरादून के प्रांगण में आयोजित कृषि प्रदर्शनी एवं किसान मेला में स्टॉल लगाया गया, जिसको मा. मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड, श्री हरीश रावत एवं मा. कृषि मंत्री उत्तराखण्ड, डा. हरक सिंह रावत द्वारा भ्रमण के दौरान अवलोकित किया गया। उक्त प्रदर्शनी में केन्द्र द्वारा विकसित किये गये तकनीकों को प्रदर्शित किया गया, जिससे लगभग 1160 कृषक लाभान्वित हुए।

कृषि प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मा. मुख्यमंत्री

क्षेत्रीय परियोजना निदेशालय जोन–4, कानपुर द्वारा आयोजित जनजातीय विकास परियोजना (टी.एस.पी.) की बैठक में अप्रैल 25, 2015 को केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

केन्द्र द्वारा जनपद देहरादून में मई 05, 2015 को मा. मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड, श्री हरीश रावत द्वारा कृषक महोत्सव के उद्घाटन के अवसर पर विकास खण्ड सहसपुर के ग्राम झिबरहेड़ी में आयोजित गोष्ठी में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। न्यायपंचायत स्तर पर आयोजित कृषक गोष्ठियों में मई 06–15, 2015 की अवधि में फसलोत्पादन, पशु पोषण, चारा उत्पादन, मृदा स्वास्थ्य सम्बन्धी, महिला समूह गठन विषयक 34 न्याय पंचायतों पर गोष्ठियों में वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया तथा तकनीकी ज्ञान के माध्यम से 5036 कृषक पुरूष एवं महिलाओं को लाभान्वित कराया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की 22वीं कार्यशाला में प्रतिभाग करने हेतु मई 26–28, 2015 को केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिसमें केन्द्र द्वारा वर्ष 2014–15 का प्रगति विवरण एवं वर्ष 2015–16 की कार्ययोजना प्रस्तुत की गई। कार्यशाला में कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी द्वारा पौध उत्पादन प्रबन्धन एवं तकनीक को कृषक समुदाय में विस्तृत रूप से प्रदर्शित करने हेतु क्षेत्रीय परियोजना निदेशालय, जोन–4, कानपुर द्वारा उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

इंडियन इन्स्टयूट ऑफ स्वायल कन्जरवेशन, देहरादून के 20 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा जून 26, 2015 को केन्द्र पर भ्रमण किया गया, जिनको केन्द्र के प्रक्षेत्रों पर अनार उद्यान, लींची उद्यान, आम उद्यान, चारा घास एवं सब्जियों की संरक्षित खेती का अवलोकन कराकर तकनीकी ज्ञान के माध्यम से लाभान्वित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

केन्द्र द्वारा ग्राम ल्वाड़ी विकासखण्ड देवाल में आलू के कम जमाव के कारण कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्र पर अप्रैल 01, 2015 को डाइग्नोस्टिक भ्रमण किया गया।

माह अप्रैल में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन (मुर्गी पालन) के अन्तर्गत कृषक प्रक्षेत्र ग्राम थाला विकासखण्ड थराली पर पशुपालन वैज्ञानिक द्वारा डाइग्नोस्टिक भ्रमण किया गया।

अप्रैल माह में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन (मुर्गी पालन) के अन्तर्गत ग्राम ल्वांड़ी विकासखण्ड देवाल में 23 कृषकों को, जिसमें 14 अनुसूचित जाति एवं जनजाति कृषकों को 500 चूजे वितरित किये गये।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा मैरो कददू के प्रथम पंक्ति प्रदर्शन का ग्राम माल–बजवाड़, विकासखण्ड थराली के अन्तर्गत अप्रैल 30, 2015 को प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया।

सीमान्त ग्राम माणा में अनुसूचित जनजाति कृषकों हेतु माह मई में जिला उद्यान विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा सेब के बागानों के जीर्णोद्वार एवं बीमारियों से बचाव हेतु प्रशिक्षण दिया गया।

माह मई में आतमा परियोजना अन्तर्गत ग्राम सरतोली में कृषक वैज्ञानिक संवाद आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 40 किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

प्रथम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन

मई 24, 2015 को ग्राम मलारी, विकासखण्ड जोशीमठ में अनुसूचित जनजाति के 25 कृषकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जिला उद्यान विभाग द्वारा किया गया था, जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा राजमा, मटर एवं बागवानी से सम्बन्धित जानकारी प्रदान की गयी।

केन्द्र पर माह जून में आतमा परियोजना के अन्तर्गत विकासखण्ड नारायणबगड़ के ग्राम नावली, छपाली एवं हरमनी से आये 25 कृषकों द्वारा केन्द्र पर भ्रमण कर फूल गोभी, ब्रोकली, लैट्यूस, टमाटर, बैगन, फ्रासबीन व अन्य जड़ी–बूटी लगे प्रदर्शनों का अवलोकन किया गया।

माह जून में केन्द्र पर आतमा परियोजना के अन्तर्गत विकासखण्ड घाट के ग्राम उस्तोली, सेरा, बनाला, सैतोली तथा कमेंड़ा से आये 15 अनुसूचित जनजाति के कृषकों द्वारा केन्द्र पर भ्रमण कर विभिन्न प्रदर्शनों का अवलोकन किया गया तथा प्लास्टिक मल्व से होने वाले फायदे के बारे में भी जानकारी दी गई।

माह जून में आतमा के अन्तर्गत ग्राम सुनाऊ मल्ला विकासखण्ड थराली में एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषकों को मुर्गी पालन से सम्बन्धित जानकारियां प्रदान की गई, जिसमें केन्द्र के पशुपालन वैज्ञानिक द्वारा 25 कृषकों को जानकारी प्रदान की गई।

प्रशिक्षण के दौरान जानकारी देते हुए वैज्ञानिक

आतमा के अन्तर्गत फार्म फील्ड स्कूल (मुर्गी पालन) पर पशुपालन वैज्ञानिक द्वारा भ्रमण किया गया तथा संचालक को मुर्गी पालन से सम्बन्धित जानकारियां तथा रखरखाव के बारे में भी सुझाव दिये गये।

प्रथम पंक्ति प्रदर्शन (टमाटर) के अन्तर्गत ग्राम सुनाऊ मल्ला विकासखण्ड थराली पर प्रभारी अधिकारी द्वारा प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा 25 प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषकों, ग्रामीण युवाओं एवं प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु आयोजित किये गये, जिसमें 465 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

केन्द्र द्वारा जून 24, 2015 को केन्द्र पर एवं जून 26, 2015 को शीतलाखेत में कृषि एवं बागवानी विषय पर जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 166 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

केन्द्र द्वारा जून 29, 2015 को मा. सांसद (अल्मोड़ा– पिथोरागढ़), श्री अजय टम्टा की अध्यक्षता में एक दिवसीय बागवानी एवं किसान मेले का आयोजन ब्लाक धौलादेवी के दन्या इण्टर कालेज में किया गया, जिसमें 200 कृषकों एवं रेखीय विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया। साथ ही 12 रेखीय विभागों, ग्राम्य एवं स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा अपने विभाग द्वारा चलाई जा रही योजना को प्रदर्शित किया गया।

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास मे 17.30 है. क्षेत्रफल पर 140 कृषकों के प्रक्षेत्र पर अग्रिम पंक्ति

प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है। केन्द्र के वैज्ञानिक समय–समय पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का भ्रमण कर कृषकों को आवश्यक कार्य करने हेतु जानकारी प्रदान करते है तथा कृषकों की समस्याओं का समाधान भी मौके पर करते हैं। विगत त्रैमास में विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों में 15 कृषि कार्यो की न्यूज प्रकाशित हुई है।

मेले का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास मे 72 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 1365 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी एवं समस्याओं का निराकरण भी किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

प्राध्यापक उद्यान, डा. डी.सी. डिमरी; विभागाध्यक्ष उद्यान, डा. रंजन श्रीवास्तव, कृषि महाविद्यालय, पंतनगर द्वारा केन्द्र पर रोपित होने वाले वृक्षों के लिए भूमि का चयन किया गया। डा. एच.सी. शर्मा, डीन, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय एवं अन्य ने केन्द्र पर सिंचाई हेतु प्रयुक्त होने वाले पानी की संभावनाओं का निरीक्षण किया। निदेशक अनुसंधान केन्द्र, डा. जे.पी. सिंह एवं अधिष्ठात्री, गृह विज्ञान महाविद्यालय, डा. रीता सिंह रघुवंशी द्वारा जून 29–30, 2015 को केन्द्र पर भ्रमण किया गया। उनके द्वारा केन्द्र पर कई शोध के विषयों पर चर्चा की गयी एवं गृह विज्ञान के विद्यार्थियों के शोध हेतु संभावनाओं का आंकलन किया गया।

विगत त्रैमास में केन्द्र पर 14 तथा केन्द्र से बाहर 17 प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न किए गए, जिसमें क्रमशः 270 (पुरूष 167 एवं 103 महिला) एवं 363 (पुरूष 217 एवं 146 महिला) कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा ग्रामीण युवाओं हेतु 01 प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसके द्वारा 10 (पुरूष 08 एवं 02 महिला) प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 02 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसके द्वारा 40 (पुरूष 30 एवं 10 महिला) प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 58 गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया, जिससे 7110 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत् त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 98 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 631 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु 631 किसानों द्वारा 61 भ्रमण किये गये और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषि सम्बन्धी समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम जानकारी प्रदान की गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 01 टी.वी. कार्यक्रम दिया गया और प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्न समाचार पत्रों में 08 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया। केन्द्र द्वारा लगाए गए 02 पशु चिकित्सा शिविर द्वारा 52 कृषक लाभान्वित हुए।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में तिलहन के 4.0 है. में 25 प्रदर्शन, दलहन के 5.0 है. में 90 प्रदर्शन, अन्य फसलों के 9.0 है. क्षेत्र में 280 प्रदर्शन लगाये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

मई 27, 2015 को केन्द्र के सभागार में आतमा द्वारा आयोजित कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया। इसमें जनपद के प्रगतिशील कृषकों ने खरीफ में फसलों के उत्पादन की उन्नत तकनीकी की जानकारी प्राप्त की। इसके साथ–साथ पशुपालन में वर्षा ऋतु में आने वाली समस्याओं के विषय में जानकारी देते हुए उनके समाधान प्रस्तुत किये गये।

केन्द्र के तत्वाधान में जून 01, 2015 को बहादरपुर सैनी में तकनीकी परिशोधन एवं आंकलन के अन्तर्गत 'गन्ने की फसल में मोथा नियंत्रण पर प्रशिक्षण' आयोजित किया गया। इसमें विस्तार से कृषकों को गन्ने में मोथा नियंत्रण की जानकारी दी गई। जून 02, 2015 को ग्राम–तासीपुर में भी इसी प्रकार गन्ने की फसल में मोथा नियंत्रण पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

गन्ने की फसल में मोथा नियंत्रण पर प्रशिक्षण

केन्द्र के तत्वाधान में जून 23–24, 2015 को कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया। इसमें जनपद के विभिन्न गांवों से आये हुए प्रगतिशील कृषकों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। इसमें कृषकों ने कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर प्रश्न किये तथा अपनी समस्याएं रखी। इनका केन्द्र के वैज्ञानिकों ने निराकरण किया। इस अवसर पर मुख्य कृषि अधिकारी, हरिद्वार भी उपस्थित रहें।

कृषक वैज्ञानिक संवाद पर व्याख्यान देते वैज्ञानिक

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 22 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसमें जनपद के 455 कृषकों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।

केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 240 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में 25 प्रक्षेत्रों पर कृषि, पशुपालन, सब्जी तथा गृह विज्ञान विषयक परीक्षणों का आयोजन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

विगत त्रैमास के दौरान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे कुक्कुट पालन, गृह वाटिका में ताजी एवं स्वस्थ जैविक सब्जी उत्पादन, सॉस व बड़ी बनाकर टमाटर का मूल्य संवर्धन, पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण का प्रयोग, पर्वतीय क्षेत्र की महिलाओं के श्रम को कम करने की तकनीक, स्क्वैश एवं अचार बनाकर आम का मूल्य संवर्धन, पशुओं के लिये संतुलित आहार, खरीफ फसलों में कुरमुला का समन्वित नियन्त्रण, गेंदे में एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन, खरीफ दलहनी फसलों में उर्वरक प्रबन्धन तकनीक, तिलहनी फसलों में उर्वरक प्रबन्धन तकनीक, फसलों में पोषक तत्वों की कमी के लक्षणों की पहचान एवं प्रबन्धन विषय पर केन्द्र पर व केन्द्र से बाहर कुल 16 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन केन्द्र के साथ–साथ जनपद के गेठिया, दोगड़ा ज्योलीकोट, सकुना, पिछलटांडा, रौशिल, गजपुर छोई, भीमताल, सुन्दरपुर बेलवाल, मायारामपुर (कोटाबाग) आदि ग्रामों में किया गया।

लघु उद्योग स्थापित करने हेतु सजावटी व साधारण मोमबत्तियां तैयार करना विषय से सम्बन्धित 3 तीन–दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किये गये। इन विषयों के अर्न्तगत आयोजित प्रशिक्षणों के माध्यम से लगभग 313 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

केन्द्र के वैज्ञानिकों ने विगत त्रैमास में तिलहन, दलहन, सब्जी, गेहूँ, पशुपालन, गृहविज्ञान, पादप सुरक्षा तथा उद्यान विज्ञान एवं अन्य विषयों के कुल 95 प्रदर्शन कार्यक्रमों का कुशल संचालन किया गया। प्रदर्शनों का आयोजन लगभग 8.95 है. क्षेत्रफल में सकुना, दोगड़ा, चोपड़ा, गेठिया, स्यालीखेत, भलुटी, भटलानी, टिकुरी, धनपुर, सरना आदि स्थानों पर सफलतापूर्वक किया गया।

विगत त्रैमास में कृषि विभाग एवं उधान विभाग जनपद–नैनीताल द्वारा 23 कृषक गोष्ठियों का आयोजन क्रमशः दोगड़ा, पिनरौ, ओखलढूंगा, सांगुड़ी गांव, मेहरा गांव, ज्योलीकोट, मंगोली, बिठौरिया नं. 1, कमलुआगॉजा, फूलचौड़, देवलचौड़, डुंगरपुर, धारी, कालाढुंगी, स्यात, छोई तथा अमगढ़ी में किया गया। इन गोष्ठियों (खरीफ) में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग करके 3,957 कृषकों को विभिन्न कृषि सम्बन्धी जैसे मृदा जीर्णोद्धार, पशुपालन एवं आहार प्रबन्धन, चारा प्रबन्धन, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को रोजगारपरक जानकारी जैसे मोमबत्ती निर्माण, बांधनी कला द्वारा वस्त्रों की रंगाई, मुलायम खिलौने बनाना, पर्वतीय क्षेत्रों में पाये जाने वाले स्थानीय फल–फूल एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन, फसलों में कीट एवं रोग से सम्बन्धित जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

केन्द्र द्वारा मछली के तालाब की रुपरेखा बनाना और मछली में फ्राई एवं फिंगरलिंग्स विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 39 प्रशिक्षणाथियों ने प्रतिभाग किया।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न स्थानों पर आयोजित 45 किसान गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया जिससे 6360 कृषक लाभान्वित हुए। गोष्ठियों का आयोजन कृषि विभाग, गन्ना विभाग, आइ0सी0डी0ए, इफ्फको, आतमा, कृभको एवं मत्स्य विभाग द्वारा किया गया। जिसमें कृषकों को खरीफ फसलों, रबी फसलों, गृह विज्ञान, मत्स्य पालन एवं गन्ना उत्पादन तकनीकी के विषय में जानकारी प्रदान की गई।

विगत त्रैमास में वैज्ञानिको द्वारा 207 प्रक्षेत्रों का भ्रमण किया गया एवं संबन्धित परामर्श कृषकों को दिये गये, जिससे कुल 492 कृषक एवं कृषक महिलाएं लाभान्वित हुए।

केन्द्र द्वारा एक शोध पत्र का प्रकाशन हुआ। 3 लेख एवं 7 कृषि सम्बन्धित खबरें विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 4 डायग्नोस्टिक भ्रमण किये गये एवं 23 कृषकों को लाभान्वित किया गया। मोबाइल मैसेज के द्वारा 220 कृषकों को जानकारी प्रेषित की गई।

केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी द्वारा कानपुर में आयोजित दो दिवसीय टी. एस.पी. (ट्राइबल सब प्लान) कार्यशाला में अप्रैल 23 से मई 25, 2015 तक प्रतिभाग किया गया।

कृषक महोत्सव खरीफ–2015 में विश्वविद्यालय का सक्रिय प्रतिभाग

कृषक महोत्सव खरीफ–2015 का आयोजन

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा विगत् वर्षों की भाँति राज्य में कृषक महोत्सव खरीफ–2015 का आयोजन मई 05–15, 2015 तक पूरे राज्य में न्याय पंचायत स्तर पर किया गया। आधुनिक कृषि तकनीकों एवं आवश्यक कृषि निवेश को कृषक प्रक्षेत्र तक ले जाने हेतु कृषक महोत्सव एक सर्वोत्तम माध्यम है, जिसमें विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्यरत 09 कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों सहित विश्वविद्यालय मुख्यालय के प्रसार शिक्षा वैज्ञानिकों, कृषि महाविद्यालय, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय तथा मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा राज्य के जनपदों में अलग–अलग रूटों पर संचालित कृषक रथों पर प्रतिभाग कर न्याय पंचायत स्तर पर आयोजित कृषक गोष्ठियों में कृषकों से सीधा संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं का समाधान किया गया। कृषक महोत्सव में वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों को कृषि, जल संग्रहण, तालाब निर्माण, मृदाक्षरण नियन्त्रण, पशुओं के पालन–पोषण एवं प्रबंधन, फसल उत्पादन की नवीन तकनीकों, फसलों के रोग एवं कीट प्रबन्धन इत्यादि से सम्बधित जानकारी दी गई।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषकों, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.) के सदस्यों, विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.) के सदस्यों, कृषि विभाग के विभिन्न स्तर के प्रसार कर्मियों एवं ब्लाक तकनीकी प्रबन्धकों (बी.टी.एम.) हेतु मोटे अनाजों की उन्नत खेती एवं मूल्य संवर्धन, फसल सुरक्षा प्रबन्धन (खरीफ), विभिन्न फसलों, फल वृक्षों एवं सब्जियों में जैव–उर्वरकों/जैव–रसायनों का उपयोग, जलवायु परिवर्तन और कृषि, परियोजना निर्माण, संचालन एवं मूल्यांकन तथा बड़े एवं मध्यम वर्ग के कृषकों हेतु फार्मिंग सिस्टम माड्यूल आदि विषयों पर 06 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 108 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 06 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण पशुपालन, कृषि वानिकी एवं सब्जी उत्पादन की उन्नत तकनीकी आदि से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 173 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण दो दिवसीय से लेकर चार दिवसीय थे। प्रशिक्षणों के अन्त में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र वितरित किये गये। उपरोक्त प्रशिक्षणों के दौरान भ्रमण कार्यक्रम में किसानों को विश्वविद्यालय स्थित सभी अनुसंधान केन्द्रों पर भ्रमण कराकर नवीनतम जानकारी प्रदान की गयी। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन प्रभारी, प्रशिक्षण प्रकोष्ठ, डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 610 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 547 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं साहित्य सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 50,005 के साहित्य एवं रू. 24,120 के धान्य फसलों एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दुः

मैदानी क्षेत्रों में कृषि हेतु–

माह जुलाईः

धान में खरपतवार नियंत्रण के लिए ब्यूटाक्लोर 50 ई.सी. 3.0 लीटर या एनीलोफास 30 ई.सी. 1.65 लीटर मात्रा प्रति है. की दर से रोपाई के 3–4 दिन के अन्दर प्रयोग करें। अधिक उपजवाली किस्मों में नाइट्रोजन 180, फास्फोरस 60, पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है. तथा सुगन्धित धान (बौनी) किस्मों में नाइट्रोजन 80–120, फास्फोरस 60 तथा पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है. की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें।

मूंगफली की बुवाई जुलाई मध्य तक कर लें। गुच्छेदार प्रजातियों के लिए प्रति है. 80–100 कि.ग्रा. तथा फैलने वाली प्रजातियों के लिए 60–80 कि.ग्रा. बीज का प्रयोग करें। फैलने वाली प्रजातियों में 45 सेमी. तथा गुच्छेदार प्रजातियों में 30 सेमी. पंक्ति से पंक्ति की दूरी तथा 15–20 सेमी. पौधे से पौधे की दूरी रखें।

गन्ना में जलभराव वाले खेतों से जल निकास की व्यवस्था करें। प्रथम सप्ताह में जड़ों पर हल्की एवं अन्तिम सप्ताह में पर्याप्त मिट्टी चढ़ाये। फसल की बढ़वार अच्छी होने पर 5 फीट की ऊंचाई पर बंधाई करें। अगोला बेधक कीट की रोकथाम के लिए कार्बोफ्यूरान 3 जी. का 33 कि.ग्रा. प्रति है. को नमी की दशा में प्रयोग करें। पाइरिल्ला या सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर 1.25 लीटर क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. की दवा को 600–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. छिड़काव करें।

बैंगन की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए जुलाई के प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह में 60X60 सेमी. की दूरी पर सांयकाल के समय रोपाई करें।

फूलगोभी की अगेती फसल हेतु ऊँचे खेत में 50X30 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

आम के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। नर्सरी में वीनियरकलम बांधने का कार्य प्रारम्भ करें।

नीबूवर्गीय फल वृक्षों में कैंकर की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स–50 का छिड़काव करें। बाग में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।

अमरूद के फलदार बाग में नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग करें।

पपीता में जल निकास का प्रबन्ध करें। तना विगलन की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स–50 घोल से छिड़काव करें।

लीची के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य करें। नये पौधें तैयार करने के लिए गूटी बांधने का कार्य इस माह समाप्त कर लें।

आंवला के बाग की रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। प्ररोह गांठ व रस्ट रोग की रोकथाम हेतु नुवाक्रान व इण्डोफिल एम–45 का छिड़काव करें।

नाशपाती में बीजू पौधों पर कलम बांधे। कज्जली रोग की रोकथाम हेतु पेड़ों पर जीनेब का छिड़काव करें।

आडू एवं आलूबुखार में भूरा विगलन रोग की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

माह अगस्तः

धान की फसल में नाइट्रोजन की पहली 1/4 भाग मात्रा कल्ले फूटते समय एवं दूसरी 1/4 भाग मात्रा बालियों में गोभ के निकलने से पहले यूरिया के रूप में ट्रापड्रेसिंग के रूप में डालें। खैरा रोग के नियंत्रण के लिए 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 20 कि.ग्रा.

यूरिया को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। जीवाणु झुलसा के लक्षण दिखाई देते ही 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन व 500 ग्राम कॉपर–आक्सीक्लोराइड को आवश्यक पानी में घोलकर प्रति है. छिड़काव करें। प्रारम्भिक अवस्था में यदि खेत में औसतन 8–10 प्रतिशत मृत गोभ तना छेदक के तथा 10–15 भूरा फुदका की संख्या प्रति पौधा दिखाई दे तो कीटनाशी का प्रयोग करें।

उर्द एवं मूंग की शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई करें। इसके लिए मूंग की पंत मूंग–2, पी.डी.एम.–54, नरेन्द्र मूंग–1, पंत मूंग–4 व 5 एवं उड़द के लिए पंत उर्द–19, 35 व 40 व नरेन्द्र उर्द–1 बो सकते हैं।

अरहर में पत्ती लपेटक कीट का प्रकोप होने पर क्वीनालफास 25 ई.सी. की 1 लीटर मात्रा को 600–800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मूंगफली में खरपतवार नियंत्रण के लिए एक निराई करें। यदि खेत में दीमक का प्रकोप हो तो 4 लीटर प्रति है. की दर से क्लोरपाइरीफास का प्रयोग करें। टिक्का रोग नियंत्रण के लिए खड़ी फसल पर 2.5 ग्राम मैंकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

टमाटर, बैंगन व मिर्च में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई, सिंचाई व जल निकास की व्यवस्था करें। टमाटर में झुलसा नामक बीमारी के नियंत्रण हेतु 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम–45 का छिड़काव करें। बैंगन में फल तथा तना छेदक नामक कीट के बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें। मिर्च में कीटों तथा बीमारियों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम–45 व 0.15 प्रतिशत मैटासिस्टाक का घोल बनाकर एक छिड़काव अवश्य करें।

फूलगोभी की मध्यकालीन फसल की 45X45 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

आम के पौधशाला में मूलवृंत तैयार करने के लिए गुठलियों की बुवाई करें। नये पौधें तैयार करने के लिए 1 वर्ष पुराना मूलवृंत पर वीनियर कलम बांधने का कार्य करें। शाखा गांठ कीट की रोकथाम के लिए रोगोर (0.2 प्रतिशत) घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

माह सितम्बरः

अरहर में पत्ती लपेटक एवं फलीबेधक कीट के रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. की 100 मि.ली. दवा एक लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मूंगफली में फूल बनने एवं खूंटियों के भूमि में प्रवेश तथा फलियों के विकास के समय भूमि में पर्याप्त नमी आवश्यक है। नमी के अभाव में सिंचाई का प्रबन्ध करें।

वर्षा न होने पर गन्ना की फसल में सिंचाई करें। गन्ना की दूसरी बंधाई आवश्यकतानुसार करें। कण्डुवा व लालसड़न ग्रसित पौध दिखाई देने पर सावधानीपूर्वक उखाड़कर नष्ट कर दें। गुरदासपुर बेधक की रोकथाम के लिए गन्ने के ऊपर का सूखा भाग काटकर नष्ट कर दें।

तोरिया की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें। बुवाई हेतु पी.टी.–30, 303, 507, संगम, भवानी, उत्तरा आदि किस्में उपयुक्त है। बीज दर 3–4 कि.ग्रा. प्रति है. 30 सेमी. की लाईन में 3–4 सेमी. गहरी बुवाई करें। बीज को 2.5 ग्राम थाइराम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करें। उर्वरकों में फास्फोरस के लिए सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग लाभदायक होता है क्योंकि इसमें 12 प्रतिशत सल्फर की उपलब्धि हो जाती है।

अच्छी पैदावार व आमदनी प्राप्त करने के लिए इस माह 50X50 सेमी. की दूरी पर टमाटर की रोपाई करें।

अगेती आलू की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह में की जा सकती है। इसके लिए कुफरी चन्द्रमुखी व कुफरी अशोका उन्नत किस्में है।

नीबू वर्गीय फलों को गिरने से रोकने के लिए 2, 4–डी या नैप्थलीन एसिटिक एसिड का छिड़काव करें।

बेर में चूर्णित आसिता की रोकथाम हेतु कैराथेन का छिड़काव करें।

पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि हेतु–

माह जुलाईः

टमाटर/मिर्च, अदरक, हल्दी में बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम–45 नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।

सेब/नाशपाती के बाग में भूमि संरक्षी फसलों की बुवाई करें। कज्जली धब्बा रोग की रोकथाम हेतु जीनेब व ब्लाइटाक्स–50 का छिड़काव करें।

आडू, आलूबुखारा व खुबानी में भूरा विगलन की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

माह अगस्तः

सिंचित धान में बाली निकलने से पूर्व पर्याप्त नमी की दशा में 2.0 कि.ग्रा. यूरिया प्रति नाली प्रयोग करें। तना छेदक कीट के नियंत्रण के लिए क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. या क्यूनालफास 25 ई.सी. की क्रमशः 30 मि.ली. व 40 मि.ली. प्रति नाली की दर से 16–20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई करें। कमला कीट, क्यूलिआप्स एवं गर्डिल विटिल कीट नियंत्रण के लिए डायमेथोएट 30 ई.सी. 20 मि.ली. दवा प्रति नाली को 16–20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

आलू, टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, अदरक, हल्दी में झुलसा नामक बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम–45 नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।

भिण्डी, लोबिया में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। नई फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति है. की दर से खड़ी फसल में डालें।

खीरा वर्गीय फसलों में 10–15 ग्राम यूरिया प्रति थाले की दर से डालें।

नीबू वर्गीय फल, सेब, नाशपाती, आलूबुखारा एवं खुबानी में फल विगलन की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स 50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

माह सितम्बरः

असिंचित क्षेत्रों में धान एवं मंडुवा में झोंका रोग नियंत्रण के लिए लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम या एडिफन्फास की 14–20 ग्राम मात्रा को 15–20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। 10 दिन के अन्तराल पर पुनः छिड़काव करें। धान में खैरा रोग नियंत्रण हेतु 100 ग्राम जिंक सल्फेट को 400 ग्राम यूरिया अथवा 50 ग्राम बुझे हुए चूने के 20 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति नाली छिड़काव करें। पत्ती लपेटक कीट के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. को 3 मि.ली. प्रति नाली की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च में झुलसा बीमारी/फलों पर धब्बे दिखाई देने पर इण्डोफिल 45 नामक दवा का 0.2 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें।

बैंगन के फल छेदक तथा तना छेदक कीट एवं खीरा वर्गीय फसलों में कीट से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत सेविन नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।

सेब की नर्सरी के बीजू पौधों पर टी–चश्मा चढ़ाएं। सेब/नाशपाती में रूइया कीट की रोकथाम हेतु मेटासिस्टाक्स का छिड़काव करें। दग्ध अंगमारी की रोकथाम हेतु बोर्डो मिश्रण (4:4:50) का छिड़काव करें।

आडू एवं आलूबुखारा पेड़ों के तनों को चूने से पोत दें। पेड़ों पर बोरेक्स का छिड़काव करें।

पशुपालन/मत्स्य पालन एवं अन्य–

माह जुलाईः

वाहय परजीवी नाशक का बाड़े में छिड़काव करें। पतले गोबर की बीमारी से बचाव हेतु सूखे चारे की पर्याप्त मात्रा 30 प्रतिशत से बढ़ाकर 40 प्रतिशत कर दें।

कुक्कुटों के बिछावन को सूखा रखने के लिए इसकी नियमित गुड़ाई करें। इसके लिए बुझा हुआ चूना 1.25 कि.ग्रा. प्रति वर्ग मी. की दर से मिलायें। चूजों में काक्सीडियोसिस रोग की रोकथाम के लिए उचित उपाय करें।

तालाब के पानी में प्राकृतिक भोजन (प्लवकों) का निरीक्षण करें। मत्स्य बीज संचय के पूर्व पानी की जाँच करें एवं पी.एच. 7.5 से 8.0 व घुलित आक्सीजन 3–7 मि.ग्रा. प्रति लीटर रखें। 10–20 कु. प्रति है. प्रति माह कच्चे गोबर का प्रयोग करें।

माह अगस्तः

पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलायें।

तालाब में 25–50 मि.मी. आकार के 10000/है. मत्स्य बीज का संचय करें। गोबर की खाद के प्रयोग से 15 दिनों के बाद एन.पी.के. खादों (यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट व पोटाश) का प्रयोग करें। एन.पी.के. खादों के प्रयोग के 15 दिनों के पश्चात् 10–20 कु./है. गोबर की खाद का प्रयोग करें।

माह सितम्बरः

यदि पशु मिट्टी खा रहा है तो उसे संतुलित आहार के साथ–साथ 40 से 50 ग्राम खनिज मिश्रण दें, साथ ही चिकित्सक के परामर्श के अनुसार अन्तः कृमिनाशक दवा पिलायें। यकृत कृमि, निमोनिया एवं दस्त से बचाव हेतु चिकित्सक की सलाह लें।

तालाब के पानी में प्लवकों का निरीक्षण करें व संतोषप्रद मात्रा को कायम रखें। मछलियों के भार का 2–3 प्रतिशत की दर से परिपूरक आहार दें।

निदेशक प्रसार शिक्षा का विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा अप्रैल 17, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल) तथा अप्रैल 18, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) का भ्रमण कर केन्द्र द्वारा क्रियान्वित किये जा रहे कार्यक्रमों का निरीक्षण किया गया। साथ ही केन्द्र के विकास हेतु वैज्ञानिकों को उचित दिशानिर्देश दिये गये। इस भ्रमण में ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृ. एवं जल स. अभि.) भी साथ थे।

मा. कुलपति, डा. मंगला राय द्वारा जून 06–08, 2015 तक कृषि विज्ञान केन्द्रों मटेला (अल्मोड़ा), ग्वालदम (चमोली), गैंना एंचोली (पिथौरागढ़), लोहाघाट (चम्पावत) के भ्रमण के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा भी प्रतिभाग किया गया।

मा. कुलपति, डा. मंगला राय द्वारा जून 16, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार) के भ्रमण के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा भी प्रतिभाग किया गया।

98वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा 98वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी पन्तनगर में अक्टूबर 01–04, 2015 तक आयोजित की जा रही है, जिसमें कृषि निवेश से सम्बन्धित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फर्में, स्वयंसेवी संस्थाएं, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की फर्में एवं कृषि से सम्बन्धित शैक्षणिक/शोध संस्थान आदि अपने स्टॉल सहित सादर आमंत्रित हैं। किसान मेले में आयोजित किये जाने वाले प्रमुख कार्यक्रमों के विवरण निम्नवत हैं :–

प्रमुख आकर्षण

- अनुसंधान केन्द्रों पर प्रदर्शनों का अवलोकन
- कृषि सूचना केन्द्र का अवलोकन
- आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन
- उन्नतशील बीज एवं पौधों की बिक्री
- कृषि उद्योग प्रदर्शनी
- विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री

विशेष कार्यक्रम एवं प्रतियोगितायें

✷ फल–फूल, शाक–भॉजी एवं परिरक्षित पदार्थों की प्रदर्शनी व प्रतियोगिता	1–2 अक्टूबर
✷ संकर बछियों की नीलामी (अपरान्ह 2.00 बजे) शैक्षणिक डेरी फार्म, नगला	2 अक्टूबर
✷ पशु प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता (पूर्वान्ह 10.00 बजे) पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय	3 अक्टूबर
✷ विशेष व्याख्यानमाला (अपरान्ह 2.30 से 3.30 बजे) गाँधी हाल	1–3 अक्टूबर
✷ किसान गोष्ठी (अपरान्ह 3.30 से 6.30 बजे) गाँधी हाल	1–3 अक्टूबर
✷ सांस्कृतिक कार्यक्रम (सांय 7 से 8.30 बजे) गाँधी हाल	1–3 अक्टूबर
✷ समापन एवं पुरस्कार वितरण (अपरान्ह 3.00 बजे) गाँधी हाल	4 अक्टूबर

मेले में स्टॉल लगाने एवं अन्य सम्बन्धित विशेष जानकारी निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास एवं संयुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा तथा मेला समन्वयक, डा. टी.पी. सिंह के दूरभाष संख्या 05944–233380 (कार्या.), 234486 (आवास) एवं मो. 07500241498 से प्राप्त की जा सकती है।

निदेशक की कलम से

विश्व की बढ़ती जनसंख्या एवं औद्योगिकरण के कारण कृषि योग्य भूमि का आकार निरन्तर घटता जा रहा है। अतः भोजन आपूर्ति हेतु खाद्य उत्पादों के अधिक से अधिक उत्पादन के लिए खेतों में कीटनाशी, फफूँदनाशी, खरपतवारनाशी, चूहेमार दवाएं व रासायनिक उर्वरकों आदि का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। चूंकि ये रसायन जहरीले होते हैं तथा जिस प्रकार ये फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले जीवों के लिए घातक हैं उसी प्रकार असावधानीपूर्वक खेतों में किए गए इनके प्रयोग से खाद्य पदार्थ प्रदूषित हो जाते हैं, जिसका दुष्प्रभाव मानव, जीव–जन्तुओं, पशु–पक्षियों पर पड़ता है व प्रकृति में जैविक व अजैविक पदार्थों के बीच आदान–प्रदान का चक्र (इकोलॉजी सिस्टम) भी प्रभावित होता है। यह परिवर्तन वातावरण व मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इन सभी समस्याओं से निपटने हेतु हमें ऐसे विकल्प खोजने होगें, जिनके दूरगामी प्रभाव मानव व सभी जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो व वातावरण के लिए सुरक्षित हो। इस दिशा में 'जैविक खेती' एक महत्वपूर्ण विकल्प है। 'जैविक खेती उत्पादन' एक स्थाई, विश्वसनीय, प्रदूषण रहित, स्वास्थ्य हेतु लाभकारी एवं रसायन अवशेष रहित खाद्य उत्पादन की एक लाभकारी तकनीक है। इसके द्वारा गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन के लिए स्थानीय जलवायु के अनुकूल विकसित उत्पादन तकनीकों, जैविक खाद, जैविक कीटनाशक उत्पादन तकनीकों व जैव नियंत्रण की विभिन्न विधियों आदि के सफल प्रबन्धन की जानकारी आवश्यक है। जैविक खेती हेतु रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादों एवं दवाइयों के प्रयोग को बढ़ावा देकर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीकों की जानकारी कृषकों तक पहुंचाना जरूरी है। इससे जल, मृदा व वातावरण शुद्ध रहेगा व प्रत्येक मनुष्य एवं जीवधारी भी स्वस्थ रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 'जैविक खेती' को अपनाने के लिए निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। 'जैविक खेती' के लाभों से निरन्तर लोगो को अवगत कराने हेतु कृषि विभाग द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर 'जैविक कृषि मेले व फूड फेस्टिवल' का भी आयोजन किया जाता है। इसमें प्रदेशभर के किसान कृषि की आधुनिक तकनीकों से जैविक खेती की विधि के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं व स्थानीय, देशी व विदेशी पर्यटकों द्वारा जैविक उत्पादों की अच्छी खरीद से जैविक खेती करने वाले किसानों को अपनी फसल का उत्तम लाभ मिलता है।

भारत में 60 प्रतिशत कृषि क्षेत्र ऐसा है जहाँ जलवायु की अनुकूलता के कारण जहरीले कीटनाशकों व रासायनिक खादों की बहुत ही कम मात्रा या इनके बिना भी खेती की जा सकती है, जिसमें उत्तराखण्ड का प्रमुख स्थान है। इस प्रकार भारत के अन्य राज्यों की भांति उत्तराखण्ड में भी 'जैविक खेती' को आधुनिक वैज्ञानिक तरीको से बढ़ाने का व्यापक प्रचार व प्रयास निःसन्देह ही कृषि जगत में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकता है, जिससे कि ग्रामीणों व स्थानीय लोगों को उत्तम रोजगार के साधन उपलब्ध कराने के साथ पहाड़ों से तेजी से हो रहे पलायन को भी रोका जा सकता है। कृषि बागवानी विशेषज्ञों के अनुसार 'जैविक खेती' से प्रथम दो–तीन साल तक फसल उत्पादन पर असर पड़ता है लेकिन उसके बाद उचित वैज्ञानिक तरीकों से उपयोग की गई जैविक खादों, दवाइयों के प्रयोग से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वह 'जैविक खेती' की आधुनिक तकनीकों व अनुसंधानों के व्यापक प्रचार–प्रसार द्वारा सुरक्षित पर्यावरण व उत्तम मानव स्वास्थ्य के साथ प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में अपना बहुमूल्य योगदान देगें।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

कुलपति डा. मंगला राय द्वारा विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के भ्रमण कार्यक्रम की झलकियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : विश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर